THE PATIALA AND EAST PUNJAB STATES UNION APPROPRIATION (VOTE ON ACCOUNT) BILL, 1953

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH): Sir, I beg to move.

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

This, Sir, is a Vote on Account. We want to have four months' service expenditure to be voted as it will not be possible for all these demands to be passed by the House of the People in the course of the next month.

MR. CHAIRMAN Motion moved:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People be taken into consideration."

LT. COL. J. S. MANN (PEPSU):

ले० कर्नल ज० एस० मान (पेप्सू) : चेयरमैन साहब, कल से इस हाउस में पटियाला और पंजाब स्टेट यूनियन का जो बजट पेश हुआ उसके मुताल्लिक बहुत बहस हुई। मैंने उन लोगो को भी सुना जिन्होंने कि पेप्सू यूनियन को कभी नक्शे पर भी नही देखा है लेकिन उन्होंने मुखालिफत की कि पेप्सू में यह हो रहा है वह हो रहा है, वहां ला एंड आर्डर (law and order) नही है, वहां तालीम नही है, वहां सड़कें नही है और वहा ऐसा अंधाधुन्ध मचा हुआ है कि जिसके मुताल्लिक जमीन आसमान के कुलाबे मिलाये जा रहे है। साहबे सदर, आपकी वसातत से उन साहबान से मै अर्ज करना चाहता हूं, जिन्होने कि पेप्सू की अहमियत को नही पहचाना और जिन्होने नही देखा कि हिन्दुस्तान के नक्शे पर पेप्सू की क्या अहमियत है और क्या क्या कुर्बानिया करके उन्होने हिन्दुस्तान का नक्शा बनाया है, उन लोगो को सुनकर मै हैरान हू उनके इस हाउस में ऐसी बाते कहने से, जिनका कि उनको पता नही है, मुझे अफसोस आता है। मै यह समझता था कि इस हाउस मे बहुत आलिम लोग, बडे अच्छे लोग, हर एक चीज को पहचानने वाले लोग है और वे वही बात कहेगे जिसको कि पहले वे तौल ले, यानी पहले बात तौल लेगे तो फिर बात कहेगे लेकिन मुझे अफसोस हुआ कि कोई साउथ (South) से उठता है और कोई वैस्ट (West) से उठता है और कोई किसी तरफ से उठता है और पेप्सू के ऊपर नुक्ताचीनी शुरू हो जाती है। मै इसका और कोई मतलब नही समझता सिर्फ यह समझता हू कि इसका बहुत जबरदस्त प्रोपेगंडा (propaganda) किया गया है कि वहां सिर्फ नान-कांग्रेस (Non-Congress) हुकूमत थी। इस वास्ते हर एक के दिल मे यह चीज़ बैठाई गई कि यह हो रहा है, वह हो रहा है। दरअसल अगर मै आपको खिदमत मे आइटम बाई आइटम (item by item) अर्ज करूं तो आपको मालूम हो जायेगा कि पेप्सू मे वे आफिसर्स (officers) और वे तजुर्वेकार आदमी काम कर रहे है जिन्होने कि हिन्दुस्तान मे इतना तजुर्बा हासिल किया हुआ है कि उनका कोई सानी नही मिलता।

साहबे सदर, पेप्सू के फाइनेंस सेक्रेटरी (Finance Secretary) मिस्टर वाटेल है जो कि ज्वाइट पजाब (Joint Punjab) में एकाउटेंट जनरल (Accountant General) थे और वे इतने काबिल आदमी है कि मै दावे से कह सकता हूं कि हिन्दुस्तान भर मे ऐसा फाइनेंस सेक्रेटरी

[Lt.-Col. J. S. Mann.]

और ऐसा फाइनेनशर (financier) आपको नही मिलेगा जैसा कि पैप्सू मे है। वह पेप्सू के फाइनेंसेज को कट्रोल कर रहे है और पैसे पैसे को इकट्ठा करके पेप्सू की बहबूदी को नजर मे रख रहे है और पैसो को ठीक से डिपार्टमे ो मे तक्सीम कर रहे है। इसी तरह से एजुकेशन डिपार्टमेट मे वहा डा० हरनाम सिह है, जोकि बडे काबिल आदमी है। उन्होने पेप्सू की तालीम का नक्शा बदल दिया है, वहा पहले तालीम बिल्कुल नही थी लेकिन दो तीन सालो मे देखिए कि वहा तालीम इतनी ज्यादा बढ गई है, पिछले साल इतने स्कल खुल गये है और लोगो मे तालीम का इतना शौक पैदा हो गया है कि लोग अपने आप आधा रुपया देकर हर गाव मे और हर जगह स्कूल खुलवा रहे है। इसी तरह से पी० डब्लू० डिपार्टमेट (P. W. Department) के इरीगेशन डिपार्टमेट (Irrigation Department) मे हमारे रघुवीर सिह जी इजीनियर है। हिन्दुस्तान मे मिस्टर कोशला, जो कि चीफ इजीनियर (Chief Engineer) है उनके बाद वह दूसरे दर्जे के शख्स है जो कि पेप्सू यनियन मे काम कर रहे है।

KHWAJA INAIT ULLAH (Bihar):

ख्वाजा इनायत उल्ला (बिहार) : सब अफसरो की तारीफ ही कर रहे है ?

LT. COL. J. S. MANN:

ले० कर्नल जे० एस० मान : साहबे-सदर, आप वहा की कैनाल (canal) को देखिए, वहा की सडको को देखिए। वहा आठ, दस कनाल खुद चुकी है जिनकी वजह से वहा इतना अनाज और इतनी चीजे पैदा होगी कि पेप्सू सारे हिन्दुस्तान को दे सकेगा। इसी तरह से सिविल सप्लाईज (Civil Supplies) के मुहकमे मे मिस्टर कश्यप है जोकि एक आला आदमी है। वह वहां से कितना अनाज बचा कर और दूसरे प्राविसेज (Provinces) को दे रहे है।

इसके अलावा मेरी समझ मे नही आता कि ला एड आर्डर का जिक्र किया जाता है। वहा हिन्दुस्तान भर मे माने हुए इडियन पुलिस (Indian Police) के आदमी सरदार गुरुदयाल सिह बैठे हुए है जिन्होने कि सैकडो डाकुओ को गोलियो का निशाना बनाया है और जो दो चार बाकी रह गये है उनको भी गन्ने के महीने के बाद राउड अप (round up) करके खत्म कर देना चाहते है।

साहबे सदर, यह भी कहा जाता है कि पेप्सू यूनियन की जरूरत नही है, उसको मर्ज कर दिया जाये, उसको खत्म कर दिया जाये और उसके वास्ते इतना रुपया लगाने की जरूरत नही है। मेरी समझ मे नही आता कि ऐसा क्यो किया जाय। पेप्सू यूनियन के आदमी भी उसी हिन्दुस्तान के बाशिन्दे हैं जिसमे कि यू० पी०, सी० पी० है, जिसमें कि दिल्ली प्राविन्स है, पजाब प्राविस है, बाम्बे प्राविस है, मद्रास प्राविस है और भी बहुत से प्राविस है। अभी ही आपने १०, ११ जिलो को एक छोटा सा आध्र प्राविस बना दिया है।

SHRI B. RATH (Orissa):

श्री बी० रथ (उडीसा) : वहां की पापुलेशन (population) ज्यादा है।

LT. COL. J. S. MANN:

ले० कर्नल जे० एस० मान : May be populated हो सकता है कि उसकी रेवेन्यु (revenue) और पापुलेशन ज्याद

हो । लेकिन पेप्सू एक बार्डर प्राविस (border province) है इसलिए बजाय इसके कि हर एक बात के लिए उसकी नुक्ता-चीनी की जाय उसको बहुत सी सहूलियते देकर अपने बार्डर को मजबूत करना चाहिए और उसे ज्यादा से ज्यादा तरक्की देनी चाहिए । बजाय इसके यहा से बैठकर बिना उसकी अहमियत को जाने हुए, बिना उसकी असलियत को जाने हुए यह कह देना कि उसको मर्ज (merge) कर दिया जाय मेरे ख्याल मे ठीक नही है । जिसको आप नही जानते उसके लिए यह कह देना कि उसको मर्ज कर के हिमाचल प्रदेश मे मिला दिया जाय या कुछ और कर दिया जाय मै ठीक नही समझता । मै कहता हू कि हिमाचल प्रदेश को पजाब मे क्यो मिलाया जाय, उनकी आपस मे मिलती जुलती कोई जबान नही है । इसलिए मै कहता हू कि उसको या पेप्सू को मिला कर एक यूनियन क्यो बनाई जाय । अगर काश्मीर प्राविस के लिए यह कहा जा सकता है कि वहा के लोगो की राय की जरूरत है और लोग अपनी राय देगे कि कहा वह जाना चाहते है तो फिर क्या पैप्सू की राय नही ली जायेगी कि जो लोग पैप्सू मे रहते है वह अपनी किस्मत का फैसला करेगे कि उनको किधर जाना है और किधर नही जाना है और उनको किस तरह अपने आपको जिन्दा रखना है और बनाना है । कोशिश यह की जा रही है कि स ब को मिला कर काग्रेस हुकूमत बना दी जाय । इस तरह नही हो सकेगा । मै अर्ज करता हू कि अगर ऐसी चीजे करनी है तो जो करे उसमे वहा के लोगो को साथ लेकर करें । उनको अपने साथ लाने की कोशिश करे उनके लिए अपना कुछ खर्च करे उन को बतावे कि हम आपके साथ रह कर, आप के साथ मिलकर ज्यादा से ज्यादा क्या आसानिया दे सकेगे और किस तरह से आपकी ज्यादा से ज्यादा बहबूदी कर सकते है । अगर ऐसा होगा तो लोग खुद बखुद अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार होगे । मगर आज आप यहा बैठ कर अगर तानाजनी करेगे तो मै आपकी खिदमत मे यह अर्ज कर देना चाहता हू कि वह कभी भी आपके साथ आने को तैयार नही है और न होगे ।

साहेब सदर.....

MR CHAIRMAN: It's time!

LT COL J S. MANN: I would just finish I want to say something regarding Agriculture Department, Sir. एग्रीकल्चर के मुहकमे मे जो शख्स इस वक्त काम कर रहे है उनको पजाब वापस माग रहा है । उन्होने जहा पहले पेप्सू मे आठ हजार एकड के करीब काश्त होती थी उसको बढा कर अब १० हजार एकड कर दिया है । अब जितनी काटन (cotton) जितना वीट (wheat) और जितना मेज (maize) पेप्सू देने लग गया है उसका पहले अन्दाजा भी नही किया जाता था ।

तो मै कहता हू कि जो यह कहा जाता है कि सर्विसेज (services) करप्ट (corrupt) है वह गलत है । इतने चोटी के आदमी होते हुए, इतने अच्छे आदमी होते हुए भी अगर आप इस तरह उनको बदनाम करेगे तो मै कहता हू कि उनके काम मे बडा ही धक्का लगेगा । मै कहता हू कि लोगो को बजट को पढना चाहिए और उसको देखना चाहिए कि वहा कितनी तरक्की हुई है, कितने अच्छे काम हुए है, कितनी अच्छी नहरे वहा खुद चुकी है, कितने अच्छे स्कूल बन गये है और कितनी अच्छी सडके बन चुकी है, वहा कितना रिहैबिलिटेशन

[Lt. Col. J. S. Mann.]

(rehabilitation) का काम हुआ है कि जिसकी वजह से लाखो आदमी वहां आकर बसे है और उनको आराम से वहां बसाया गया है, उनको घर दिये गये है खेत दिये गये हैं, मकान बनवा कर उनको दिये गये है, उनके लिए जमीनों के ऊपर कुवे लगवा कर दिये गये है । इसलिए मेरी समझ में नही आता कि यह कहां तक ठीक ह कि यों ही कह दिया जाय कि पेप्सू में कुछ नही हो रहा है । हां, वहां जो तकलीफ है, जो बिस्वेदारों को ओर पीजेट्स (peasants) को दुश्वारियां है वे धीरे धीरे दूर होंगी और उनको दूर करना है । मुझे यकीन है कि जब सरदार लाल सिह जी कांसालिडेशन (consolidation) के मुहकमे में लगे हुए हैं तो ये दिक्कते जरूर दूर होगी । वहां कांसालिडेशन का बहुत काफी काम हुआ है । अगर आप तशरीफ ले जाये तो यह सब देख सकते है और इन साहबान को बता सकते है कि क्या क्या अच्छी अच्छी चीजे है और क्या क्या अच्छे अच्छे काम हुए है । मै कहता हूं कि तमाम हिन्दुस्तान के आदमी आकर देखे कि इन आदमियों ने क्या क्या अच्छे काम किये है और उन्होने क्या क्या सूरते पैदा की है ।

मै जनाब का मशकूर हू कि मुझे आपने बोलने का इतना वक्त दिया ।

[For English translation, *see* Appendix IV, Annexure No. 89.]

MR. CHAIRMAN: Thank you.

Sardar Kartar Singh. Be very brief.

SHRI KARTAR SINGH (Pepsu): Yes, Sir. Mr. Chairman, my learned friend from PEPSU has given certain instances to show that the administration in PEPSU was efficiently run by its officers. But I say that all those instances that he has given rather go to show that my contention is correct. Not a single instance has been given by my hon friend involving the permanent PEPSU services He has referred to Dr. Harnam Singh. He was a lent officer from Punjab He has referred to Sardar Gurdial Singh, I.G P. who is also a lent officer from Punjab Then he has referred to Sardar Lal Singh who is also a lent officer from Punjab Then he has referred to the officers of the Agricultural Department who are all lent officers from Punjab So, it goes to show that whatever he has said about efficiency does not apply to the permanent officers of PEPSU About those officers not a single instance has been given by my hon. friend.

SHRI M. S RANAWAT: (Rajasthan): Does the hon. Member mean to suggest that in spite of those lent officers from Punjab the administration is inefficient?

MR. CHAIRMAN: Order, order. No interruptions.

SHRI KARTAR SINGH: I am coming to that With regard to the two other gentlemen to whom my hon. friend referred, my submission is that they are retired hands and they have been re-employed by the State.

Now I shall refer to the inefficiency of the Administration. I shall refer to only one case, not more. A point was made in the other House by my Communist friends, and also in this House, that action should be taken against those returning officers in PEPSU who had illegally rejected nomination papers

SHRI S. N. MAZUMDAR (West Bengal): Not that action should be taken. We said that inquiry should be made.

SHRI KARTAR SINGH: It presupposes action after inquiry.

MR. CHAIRMAN: That is a different story

SHRI KARTAR SINGH: I do not go further· I go to the very district to which my hon friend Sardar Joginder Singh Mann belongs, namely, the district of Fatehgarh Sahib In that district there are four constituencies It is a small district with only four constituencies, each constituency with a population of about 57,000 The population of the whole district is 2 lakhs and 10 or 20 thousands The Deputy Commissioner there was Sardar Balwant Singh My hon. friend fought the election from that very constituency, and in his case he was the returning officer. In this district, the elections of three out of a total of four, have been set aside on the ground that that gentleman had illegally rejected the nomination papers. I am now referring to the efficiency of the Administration. In the case of the fourth, there were many nomination papers. It is an interesting story. One advocate had also filed nomination papers He was an advocate from Bassi Unfortunately for him, his age was entered as 23, in the electoral roll The returning officer said, "How is it that your age has been shown as 23?" The man protested that his son's age was about 23, and that it had been wrongly shown as 23 in his case It could not be 23, as he had been practising as a lawyer for 15 or 18 years The returning officer said, "All right, bring proof" On the third day the advocate brought with him all necessary documents. He brought his own age certificate and the age certificate of his son The returning officer said, "Well, since your age is entered as 23, therefore, on the ground that you are not 25, I reject your papers". From this very constituency nomination papers of others were also rejected on similar flimsy grounds Others have challenged by petitions the illegitimate rejection of their nomination papers; and the election held in this 4th constituency is one of the 22 or 23 elections that may have to be set aside What happened? After the elections he retired, having attained the age of 55. A point was made by my hon. friend day before yesterday that since there was a Congress Ministry and the elections were held under the Congress Ministry, returning officers were under the influence of the Congress Ministry and had illegally rejected the nomination papers of the candidates Now in this district are the home constituencies of all the Sikh Ministers in PEPSU Sardar Gian Singh Rarewala belongs to a constituency in this district and fought the election there. Sardar Mihan Singh, another Minister, also belongs to that constituency. Sardar Dara Singh, though fought elections from adjoining Bhadson constituency, has the same home constituency. Sardar Bhupinder Singh also now belongs to a constituency in this very district.

LT.-COL. J. S. MANN: No.

SHRI KARTAR SINGH· He has got land in this very district, at a distance of 3 miles After the elections, what happened?

MR CHAIRMAN: The hon Member is going very much beyond the scope of the Bill.

SHRI KARTAR SINGH: Only two minutes.

MR. CHAIRMAN: The hon Member has already taken seven minutes.

SHRI KARTAR SINGH· What happened? The Election Tribunal has remarked, while setting aside the election of Sardar Gian Singh Rarewala and of Sardar Mihan Singh that it is unable to understand for whose benefit this was done and passed strictures against this returning officer. After his retirement this officer was reemployed by Sardar Gian Singh as a settlement officer This is only one instance. More instances can also be given.

LT.-COL. J. S. MANN: He was not 55.

SHRI KARTAR SINGH: Sir, this is the sort of administration that is being run there A clear case was made out by all sections in this House that the

[Shri Kartar Singh.]

majority of the services in PEPSU have vested interests there, and my hon. friend has not been able to refute that charge.

MR. CHAIRMAN: Would the hon. Minister like to speak?

SHRI M. C. SHAH: No, Sir.

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: We now take up the clause-by-clause consideration of the Bill. There are no amendments.

Clauses 2 and 3 and the Schedule were added to the Bil.

Clause 1, the Title and the Enacting Formula were added to the Bill.

SHRI M. C. SHAH: Sir, I move:

"That the Bill be returned."

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill be returned."

The motion was adopted.

THE APPROPRIATION (No. 2) BILL, 1953.

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH): Sir, I beg to move:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain further sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

Sir, this does not require a speech as the House is well aware that already we have passed an Act for the distribution of the Excise Duty as recommended by the Finance Commission. And when the Budget was introduced, it was not possible to make provision for this sum and therefore now by this Appropriation Bill we want to make a provision for the sum to be given to all the States as provided for in the Act that we have already passed.

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain further sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

(*No hon. Member rose to speak.*)

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain further sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: We take up now the clause-by-clause consideration of the Bill. No amendments.

Clauses 2 and 3 and the Schedule were added to the Bill.

Clause 1, the Title and the enacting formula were also added to the Bill.

SHRI M. C. SHAH: Sir, I beg to move:

"That the Bill be returned."

SHRI KANHAIYALAL D. VAIDYA (Madhya Bharat):

श्री कन्हैयालाल डी० वैद्य (मध्य भारत) : अध्यक्ष महोदय, जो बिल इस सदन के सामने रखा गया है उसके अन्तर्गत जिन जिन राज्यों